भीलवाड़ा फोकस

भीलवाड़ा की बात, फोकस के साथ.....

प्रवेशांक

RNI No. : RJHIN/25/A0890

वर्ष - 01 | अंक - 01 | प्रधान संपादक - कपिल विजयवर्गीय | बिजौलिया - मंगलवार, 17 जून 2025 | मूल्य - 1 रुपया | मो.- 86967 95959 | पृष्ठ - 4

संपादकीय

"एक नई शुरुआत, एक नई दृष्टि"

प्रिय पाठकों,

आज आपके हाथों में "भीलवाड़ा फोकस" का प्रथम संस्करण है – यह सिर्फ एक अख़बार का पहला अंक नहीं, बल्कि उस विश्वास का प्रतिबिंब है, जो हमने समाज, सच और संवाद के प्रति जताया है। हम एक ऐसे दौर में हैं जहाँ सूचनाएं चटक हैं लेकिन स्थायित्वहीन, और शोर बहुत है लेकिन संवाद बहुत कम। ऐसे समय में स्थानीय पत्रकारिता की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

स्थानीय पत्रकारिता की भूमिका

स्थानीय पत्रकारिता वह नींव है, जिस पर लोकतंत्र की असली इमारत खड़ी होती है। यही वह माध्यम है जो गाँव की गलियों से लेकर शहर के चौक-चौराहों तक, हर हलचल को दस्तावेज़ करता है। राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय मीडिया जहाँ बड़े मुद्दों में उलझा रहता है, वहीं स्थानीय पत्रकारिता वह आइना बनती है जो आम आदमी की जिंदगी को, उसकी समस्याओं को, उसकी आवाज़ को सामने लाती है।

"भीलवाड़ा फोकस" का प्रयास रहेगा कि स्थानीय प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, संस्थाओं और समाज के बीच एक मजबूत संवाद सेतु बने – जो सिर्फ आलोचना नहीं, समाधान की राह भी सुझाए। हम मानते हैं कि हर पंचायत से लेकर हर नगर परिषद तक, हर स्कूल से लेकर हर अस्पताल तक, खबरें हैं – और उनमें सुधार की संभावनाएं भी। हमारी पत्रकारिता उन मुद्दों को उठाएगी जो दूसरों के लिए 'छोटी खबर' हो सकती हैं, लेकिन किसी के जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई हैं।

हमारा दृष्टिकोण

हम निडर हैं, निष्पक्ष हैं, लेकिन सबसे पहले हम संवेदनशील हैं।
हम अफवाहों के शोर में नहीं, तथ्यों के आधार पर बोलेंगे।
हम जनता की आंख और सवालों की आवाज़ बनना चाहते हैं – सजग, सतर्क और ज़िम्मेदार।

आपसे आग्रह

इस यात्रा में हम आपके सुझावों, आलोचनाओं और समर्थन के लिए खुले हैं। "भीलवाड़ा की बात, फोकस के साथ" – यह सिर्फ एक टैगलाइन नहीं, बल्कि हमारी प्रतिबद्धता है। हमारा यह पहला कदम आप तक पहुँचा है, अगला कदम आपके साथ चलेगा।

कपिल विजयवर्गीय (प्रधान संपादक)

शाहपुरा का रामनिवास धाम-अद्वितीय शिल्प व आध्यात्मिक चेतना का संगम

आस्था, कला, तपस्या, अध्यात्म और परमार्थ का पंचतीर्थ है रामनिवास धाम

भीलवाड़ा फोकस @ शाहपुरा

मूलचन्द पेसवानी

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित शाहपुरा कस्बा न केवल ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट है, बल्कि यह आध्यात्मिक चेतना और भक्ति भाव की एक अनोखी धरती भी है। यहीं स्थित है रामस्नेही संप्रदाय की तीर्थस्थली रामनिवास धाम जो अपनी शिल्पकला, अध्यात्मिक ऊर्जा और परंपराओं के कारण एक अद्वितीय आराधनालय के रूप में प्रसिद्ध है।

रामनिवास धाम केवल एक तीर्थस्थल नहीं, बल्कि भारतीय धार्मिक परंपराओं, शिल्पकला और संत परंपरा का अद्वितीय संगम है। यहाँ हर पत्थर, हर खंभा और हर परंपरा एक कहानी कहती है, आस्था की, कला की, तपस्या की, अध्यात्म की और परमार्थ की।

आज जब दुनिया आधुनिकता के तेज बहाव में अपनी जड़ों से कटती जा रही है, रामनिवास धाम जैसे स्थान यह याद दिलाते हैं कि हमारी विरासत न केवल देखने योग्य है, बल्कि उसे आत्मसात कर जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाना भी संभव है।

रामनिवास धाम एक आराधना स्थल है, एक विरासत है, एक अनुभूति है। जो हर श्रद्धालु को न केवल शांति देती है, बल्कि उन्हें आत्मिक बल से भी भर देती है। यही इसकी सबसे बड़ी विशिष्टता है।

अद्वितीय वास्तुकला और शिल्प सौंदर्य--

रामनिवास धाम का प्रवेश द्वार ही दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। यहाँ बनीं पाँच भव्य संगमरमर की छतरियां, जिनमें सफेद, काले, दूधिया और मिश्रित रंगों का सुंदर समायोजन है, कला के प्रति इस संप्रदाय की गहरी श्रद्धा को दर्शाती हैं। इन पर की गई कांच, टाइल्स और रंगों की बारीक कलाकारी न केवल स्थानीय शिल्प कौशल का उदाहरण है, बल्कि इसे देखने वाला हर व्यक्ति इसकी भव्यता के आगे नतमस्तक हो जाता है।

सूरजपोल से प्रवेश करने पर एक कोठरी और उसकी सीढ़ियाँ एक विशेष बारादरी तक जाती हैं। यह बारादरी रामस्नेही संप्रदाय के संस्थापक स्वामी रामचरणजी महाराज की समाधि का केंद्र है। इसकी विशेषता यह है कि यह 108 स्तंभों और 84 द्वारों वाली चार मंजिला रचना है, जिसे इस प्रकार निर्मित किया गया है कि खंभों की जोड़ाई में सीमेंट या चूना नजर ही नहीं आता, मानो पत्थर ही पत्थर में जुड़ गया हो।

बारादरी के मध्य का चौक , जिसमें आसीन गादी और पादुकाएं रखी हैं, प्रवचन के समय सक्रिय प्रयोग में ली जाती हैं। शाम की आरती के पश्चात यहां महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। यह परंपरा आज भी पूरी श्रद्धा और अनुशासन से निभाई जाती है।

बारादरी के नीचे अष्टकोणीय समाधि को रामधाम कहा जाता है। यह पूजा और अर्चना का मुख्य केंद्र है। श्रद्धालु यहाँ आकर मन्नत मांगते हैं, प्रसाद चढ़ाते हैं और अद्भुत शांति का अनुभव करते हैं। रामधाम की संगमरमर पर की गई बारीक नक्काशी इसे एक अलौकिक स्वरूप प्रदान करती है।

छत्रमहल और लाल चैक की महत्ता-

रामनिवास धाम का सबसे मोहक भाग है छत्रमहल, जो रंग-बिरंगी टाइल्स से सुसज्जित है और जिसकी 16 कलात्मक छतरियां श्रद्धालुओं का ध्यान बरबस ही खींच लेती हैं। इस महल के ऊपरी भाग में राम नाम की जड़ी हुई टाइल्स और चित्रकारी देखते ही बनती है। छत्रमहल के समीप स्थित लाल चैक भी प्रमुख आकर्षण है। इसमें बनी हुई एक विशेष छतरी, जिसे श्री भंडार व वाणीजी का स्थल कहा जाता है, रंगीन फूलों से अलंकृत है। इसी चैक के सामने स्थित है राजाधिराज रणजीतसिंह की छतरी, जिसे न्यायगृह व आसन छतरी के नाम से भी जाना जाता है। लाल चौक के पीछे बना रामझरोखा, रामस्नेही संप्रदाय के वर्तमान आचार्य का निवास है। इसके मध्य में स्थित कंवरपदा की छतरी नए संतों को दीक्षा देने का स्थल है। यह दीक्षा परंपरा आज भी उतनी ही श्रद्धा से निभाई जाती है, जहां कुछ लोग स्वयं दीक्षा लेते हैं और कुछ को उनके परिवारजन मन्नत पूरी होने पर दीक्षित कराते हैं। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि स्वामी रामचरणजी महाराज वास्तव में भक्त प्रहलाद के अवतार थे। यह विश्वास 'गुरुस्तुति ग्रंथ' में भी उल्लेखित है।

ऐतिहासिक और पौराणिक मान्यता

शाहपुरा की भूमि को 'पुण्य भूमि' कहा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार एक बार भगवान शिव और माता पार्वती इस भूमि के ऊपर से आकाश मार्ग से गुजर रहे थे। शिवजी ने यहाँ प्रणाम किया। पार्वती के पूछने पर उन्होंने बताया कि भविष्य में यह स्थान संतों की

साधना स्थली बनेगा, जहाँ एक महान संत जन्म लेंगे।

इतिहासकारों के अनुसार वि. सं. 1684 में सिसौदिया वंश के सुजनसिंह, जो चित्तौड़ के राणा से रुष्ट होकर दिल्ली जा रहे थे, उन्होंने शाहपुरा में 'सिसोली नाड़ी' के किनारे विश्राम किया। तभी से यह स्थान धीरे-धीरे एक धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

फूलडोल महोत्सव-- रामनिवास धाम की जीवंत परंपरा -

रामनिवास धाम की आध्यात्मिक महत्ता को और भी ऊँचाइयों पर ले जाने वाला पर्व है फूलडोल महोत्सव। होलिका दहन के बाद आरंभ होने वाला यह पर्व न केवल भक्तों के लिए उल्लास और भक्ति का संगम होता है, बल्कि यह सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रूप में सामने लाता है।

महोत्सव की शुरुआत होलिका दहन के पश्चात आचार्यश्री के नगर में आगमन से होती है। रात्रि में जागरण, वाणीजी का पाठ, और आद्य संस्थापक द्वारा प्रयुक्त पवित्र कंबल के दर्शन श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत बनते हैं।

हालाँकि महोत्सव का कुल कालखंड 25 दिन का होता है, परंतु मुख्य आयोजन 5 दिन तक चलता है। इसका समापन रंगपंचमी पर होता है, जब आचार्यश्री द्वारा अगले वर्ष का चातुर्मास घोषित किया जाता है। चातुर्मास हर वर्ष आषाढ़ शुक्ल एकादशी से प्रारंभ होकर अश्विन शुक्ल एकादशी तक चलता है।

इस महोत्सव में दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं, जो बारादरी व रंगमहल में बैठकर शीतलता व आध्यात्मिक चेतना का अनुभव करते हैं।

ड्रोन से खींचा गया ऐतिहासिक नगरी बिजोलिया का विहंगम दृश्य

फोटो एवं कंटेट साभार - रमेश गुर्जर

भीलवाड़ा फोकस @ बिजोलिया

खनिज सम्पदा, विशेष रूप से सेंडस्टोन (पत्थर) के लिए देशभर में प्रसिद्ध और किसान आंदोलनों के इतिहास में प्रमुख स्थान रखने वाली ऐतिहासिक नगरी बिजोलिया का यह खूबसूरत दृश्य एक ड्रोन कैमरे से लिया गया है। यह क्षेत्र प्राचीनकाल से ही राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध रहा है। गुहिल व चौहान वंशों के शासनकाल से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुए बिजोलिया किसान आंदोलन ने इस भूमि को जन-आंदोलनों का केंद्र बना दिया था। आज भी यह कस्बा अपने मंदिरों, पुरातात्विक धरोहरों, जल स्त्रोतों और सेंड स्टोन खनन उद्योग के कारण राष्ट्रीय मानचित्र पर प्रमुख पहचान रखता है।

ड्रोन से लिया गया यह दृश्य न केवल इसकी भौगोलिक सुंदरता को दर्शाता है, बल्कि इसके ऐतिहासिक महत्व को भी जीवंत करता है।

शाहपुरा- धर्मनगरी, वीरों की धरती और ऐतिहासिक धरोहरों की खान

शाहपुरा के गौरवशाली अतीत से प्रेरित है वर्तमान

भीलवाड़ा फोकस @ शाहपुरा

मूलचन्द पेसवानी

राजस्थान की वीरभूमि में स्थित एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगरी शाहपुरा अपनी गौरवशाली परंपराओं, धार्मिक आस्था और शौर्य गाथाओं के लिए विशेष पहचान रखती है। यह नगरी जहां एक ओर आध्यात्मिक चेतना का केंद्र रही है, वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानियों की कर्मभूमि भी रही है। शाहपुरा वास्तव में धर्म, इतिहास, संस्कृति और पर्यटन का अद्भुत संगम है। शाहपुरा केवल एक नगर नहीं, बल्कि एक गौरवगाथा है। यहां की हर गली, हर महल, हर जलस्रोत और हर धरोहर में इतिहास बोलता है। यह वह भूमि है जहां धर्म, संस्कृति, शौर्य और स्वतंत्रता की भावना एक साथ पनपी और फली-फूली। आज शाहपुरा न केवल राजस्थान, बल्कि भारत की आत्मा को दर्शाने वाला एक समृद्ध स्थल बन चुका है। यदि इसे योजनाबद्ध रूप से विकसित किया जाए, तो यह सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक यात्राओं और ऐतिहासिक शोध का अंतरराष्ट्रीय केंद्र बन सकता है।

शाहपुरा की स्थापना और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

शाहपुरा की स्थापना 16 दिसम्बर 1631 को मुगल सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में हुई थी। उन्हीं के नाम पर इस नगरी का नाम 'शाहपुरा' रखा गया। यह नगर तत्कालीन राजाओं द्वारा विकसित एक स्वतंत्र रियासत के रूप में प्रसिद्ध रहा है। रियासत काल में शाहपुरा में विकास के ऐसे आयाम देखने को मिलते हैं जो उस समय की सोच और दूरदृष्टि को दर्शाते हैं।

राजाओं द्वारा शाहपुरा में अरवड़ बांध, नाहरसागर और उम्मेदसागर जैसे विशाल जलाशयों का निर्माण कराया गया, जो आज भी जलस्रोत व प्राकृतिक सौंदर्य के प्रतीक बने हुए हैं। रियासत के समय में शाहपुरा में स्वतंत्र बिजलीघर की स्थापना कर ली गई थी, जिससे महल और नगर रात्रि में रोशनी से जगमगाने लगते थे यह उस युग में एक असाधारण उपलब्धि थी।

रामस्नेही संप्रदाय की अंतरराष्ट्रीय पीठ-

शाहपुरा न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से बल्कि धार्मिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहां रामस्नेही संप्रदाय की अंतरराष्ट्रीय मुख्य पीठ स्थित है, जिसकी स्थापना महाप्रभु स्वामी रामचरणजी महाराज ने की थी। उनके अनुयायी रहे तत्कालीन राजा ने संगमरमर से बना भव्य रामनिवासधाम मंदिर बनवाया, जो आज भी भक्ति और शांति का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

आर्य समाज और यज्ञशाला का गौरव-

शाहपुरा को यह गर्व भी प्राप्त है कि यहां स्वामी दयानंद सरस्वती स्वयं पधारे और आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने यहां यज्ञशाला की स्थापना की, जो आज भी वैदिक परंपरा और विचारधारा का प्रतीक है।

भारत की स्वतंत्रता में शाहपुरा की अग्रणी भूमिका-

14 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के ठीक एक दिन पूर्व, शाहपुरा के तत्कालीन राजा सुदर्शन देव सिंह ने देश की पहली उत्तरदायी शासन व्यवस्था की घोषणा की। उसी दिन महल परिसर में देश का पहला तिरंगा फहराया गया। इस ऐतिहासिक क्षण में तत्कालीन प्रधानमंत्री प्रो. गोकुललाल असावा, स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मीदत्त कांटिया, रमेशचंद्र ओझा, लादूराम व्यास, अभयसिंह डांगी, कस्तूरचंद तोषनीवाल, उर्मिला कांटिया आदि उपस्थित रहे। यह स्वर्णिम अध्याय आज भी शाहपुरा के इतिहास को राष्ट्रीय गौरव से जोड़ता है।

पर्यटन के विविध आकर्षण-

आज शाहपुरा पर्यटन के क्षेत्र में भी एक उभरता हुआ केंद्र बन चुका है। यहां देश-विदेश से पर्यटक खिंचे चले आते हैं, जिनके आकर्षण का प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं--

रामस्नेही संप्रदाय की अंतरराष्ट्रीय पीठ, भक्ति और दर्शन का संगम। धनोप माताजी की शक्तिपीठ, आस्था का केन्द्र।

अरवड़ बांध, नाहर सागर व उम्मेद सागर -प्राचीन जल संरचनाओं का अद्भुत उदाहरण। ऐतिहासिक बावड़ियां - जल संरक्षण और वास्तु कला का प्रमाण। शाहजहांकालीन ढिकोला और खामोर के महल (किले) - मुगल स्थापत्य का अद्वितीय प्रतीक। शाहपुरा की ओदी शिकारगाह (हंटिंग लॉज) - रियासती काल की शान। स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृतियां- केसरी सिंह बारहठ, प्रताप सिंह बारहठ, जोरावर सिंह बारहठ, लक्ष्मीदत्त कांटिया, लादूराम व्यास, रमेशचंद्र ओझा जैसे महान वीरों का संग्रहालय। फड़ चित्रकारी व हाथकरघा उद्योग- लोककला और लघु उद्योग का जीवंत स्वरूप।

हेरिटेज होटल -

जहां इतिहास, आतिथ्य और आराम का अनूठा संगम होता है।

शाहपुरा की कला, संस्कृति और विरासत-

शाहपुरा की फड़ चित्रकला देशभर में प्रसिद्ध है। यह चित्रकला राजस्थान की लोककला का एक अनूठा उदाहरण है, जिसे देखने और खरीदने दूर-दराज से लोग आते हैं। साथ ही यहां के हाथकरघा लघु उद्योग स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत को भी संजोए हुए हैं।

मानसून की पहली बारिश के साथ हरियाली, झरनों और पर्यटकों की रौनक लौटेगी

आने वाले मानसून में बिजौलिया के झरनों में फिर बह निकलेगा प्रकृति का जादू

भीलवाड़ा फोकस @ बिजौलिया

श्याम विजय

ऊपरमाल क्षेत्र, जो सेण्डस्टोन खनन के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है, एक बार फिर से आगामी मानसून में हरियाली की चादर ओढ़ने को तैयार है। जैसे ही बारिश का मौसम दस्तक देगा, बिजौलिया के दर्जनों छोटे-बड़े झरने जीवन से भर उठेंगे और यह इलाका एक बार फिर प्राकृतिक पर्यटन का केंद्र बन जाएगा।

बारिश शुरू होते ही पूरे क्षेत्र में स्थित झरनों से पानी की धाराएं फूट पड़ती हैं और यहां की घाटियाँ और जंगल एक अलग ही रोमांचक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। हर वर्ष मानसून में हजारों सैलानी इन स्थलों पर उमड़ पड़ते हैं।

मानसून के बाद ये स्थल बनेंगे खास आकर्षण का केंद्र - मेनाल जल प्रपात-

मानसून की पहली अच्छी बारिश के बाद बिजौलिया से 20 किमी दूर स्थित यह 150 फीट गहराई वाला जलप्रपात फिर से पूरे वेग से बहने लगेगा। मंदिरों की ऐतिहासिकता और घाटियों की गहराई इसे खास बनाती है। बारिश के बाद यहां का दृश्य बेहद लुभावना होता है।

भीमलत महादेव जलप्रपात -

200 फीट ऊंचाई से गिरने वाला यह झरना मानसून में अपनी पूरी शक्ति से बहता है। यहाँ स्थित प्राचीन डेम और शिव मंदिर इसे और भी खास बना देते हैं।

भड़क जलप्रपात -

छोटी बिजौलिया में स्थित यह झरना मानसून के बाद पूरे प्रवाह में आ जाता है। यहाँ स्थित प्राकृतिक गुफा में शिवलिंग है, जो इसे धार्मिक महत्व भी प्रदान करता है।

भड़क्या माता जलप्रपात -

8 किमी दूर स्थित यह झरना 30 फीट की ऊँचाई से गिरता है और बारिश के बाद यहाँ की हरियाली और ठंडा वातावरण पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

सेवन फॉल्स -

बांका गांव के पास स्थित यह झरना अपने सात स्तरों पर गिरती जलधारा के कारण लोकप्रिय है। बारिश के बाद यह स्थान ट्रेकिंग और फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए आदर्श बन जाता है।

सीता का कुंड -

यहां का कुंड वर्षभर भरा रहता है, लेकिन मानसून के बाद इसके चारों ओर की हरियाली और झरनों का कलरव इसे और भी रमणीय बना देता है।

झरिया महादेव जलप्रपात -

मानसून में यह 120 फीट ऊंचा झरना अपने शिखर पर होता है। यहाँ का चमत्कारी कुंड, जो सांयकाल को सूख जाता है और सुबह फिर भर जाता है, पर्यटकों में विशेष रुचि का विषय है।

प्राकृतिक सौंदर्य के साथ धार्मिक व ऐतिहासिक आभा -

बिजौलिया केवल झरनों और हरियाली के लिए नहीं, बल्कि अपने धार्मिक स्थलों और पुरातात्विक धरोहरों के लिए भी प्रसिद्ध है। मंदाकिनी मंदिर, पार्श्वनाथ तपोभूमि, और तिलस्वा महादेव जैसे स्थल मानसून में और भी जीवंत हो उठते हैं।

सेवनफॉल

भड़क्या माता जी झरना

भड़क झरना

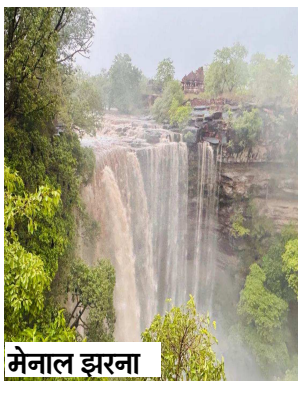

मेनाल झरना

बिजौलियां के इतिहास से नई पीढ़ी को रूबरू कराने की ज़रूरत

भीलवाड़ा फोकस @ बिजौलिया

कमलेश सोनी

एक ऐतिहासिक नगरी, जिसकी मिट्टी में धर्म, संस्कृति, संघर्ष और स्वाभिमान की अमिट छाप समाई है। इस अखबार के पहले अंक के साथ मेरी लेखनी स्वाभाविक रूप से मुझे मेरी जन्मभूमि और कर्मभूमि बिजौलियां के स्वर्णिम अतीत को काग़ज़ पर उतारने को प्रेरित कर रही है।

समय के साथ हम और हमारी नई पीढ़ी इस ऐतिहासिक धरोहर से अनभिज्ञ होती जा रही है, जो अत्यंत खेदजनक है। अतः इस गौरवशाली इतिहास को पुनः जीवंत करने और संजोने की आवश्यकता है।

इतिहास के तीन कालखंड -

जैसे भारतीय इतिहास को प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में विभाजित किया गया है, वैसे ही बिजौलियां के इतिहास को भी तीन प्रमुख कालखंडों में समझा जा सकता है.

प्राचीन इतिहास- धर्म और तप की भूमि-

बिजौलियां का प्राचीन इतिहास जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि वे यहां की रेवा नदी और भीमावन क्षेत्र में तपस्या के लिए पधारे थे। उनके पूर्व जन्म के शत्रु बेरी कमठ ने उन पर उपसर्ग किया, लेकिन धरणेन्द्र और पद्मावती देवी-देवताओं ने उनकी रक्षा की। यहीं उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिससे इस भूमि की धर्ममहिमा सिद्ध होती है। यहां स्थित पार्श्वनाथ मंदिर के उत्तर में 12वीं शताब्दी के दुर्लभ

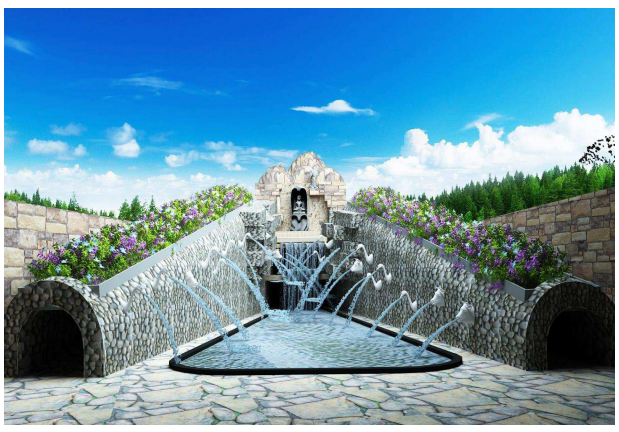

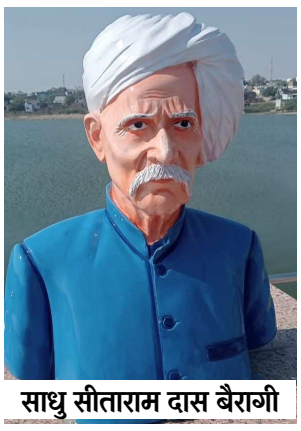

साधु सीताराम दास बैरागी

शिलालेख आज भी विद्यमान हैं, जिनमें तत्कालीन शासकों की जानकारी अंकित है। वर्ष 1986 में आयोजित संगोष्ठी में इतिहासकारों और जैन विद्वानों ने बिजौलियां को पार्श्वनाथ की तपोभूमि के रूप में प्रमाणित किया।

बिजौलियां के मंदाकिनी मंदिर, महाकाल, हजारेश्वर, उंडेश्वर मंदिर और प्राचीन कुंड स्थापत्य कला के अद्वितीय उदाहरण हैं, जो खजुराहो और देलवाड़ा जैसे ऐतिहासिक स्थलों की याद दिलाते हैं। यहां स्थित नारी गणेश मंदिर भी विशेष रूप से अद्वितीय है।

मध्यकालीन इतिहास- रियासतों की शान-

मध्यकाल में बिजौलियां, मेवाड़ रियासत का एक प्रमुख ठिकाना बनकर उभरा। इसकी स्थापना पंवार वंश के अशोक पंवार द्वारा की गई थी। यहां की राजकुमारी अजबदे का विवाह महाराणा प्रताप से हुआ, और उनके पुत्र अमर सिंह ने आगे चलकर मेवाड़ की गद्दी संभाली।

बिजौलियां रियासत की समृद्धि का प्रमाण है कि यहां के शासक को सवाई की उपाधि से नवाज़ा गया। इस ठिकाने के किलेबंदी स्वरूप विशाल

पार्श्वनाथ मंदिर

परकोटे का निर्माण किया गया, जो आज भी उसकी भव्यता का प्रमाण है।

आधुनिक इतिहास- स्वतंत्रता संग्राम में योगदान -

बिजौलियां सिर्फ ऐतिहासिक नहीं बल्कि क्रांतिकारी भी रही है। यहां 1897 से 1941 तक 44 वर्षों तक किसान आंदोलन चला। यह भारत का पहला संगठित किसान आंदोलन था, जिसने देश के स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। इस आंदोलन का नेतृत्व विजय सिंह पथिक, माणक लाल वर्मा और साधू सीताराम दास जैसे महान सेनानियों ने किया।

आज की स्थिति - इतिहास को संजोने की पुकार -

दुखद है कि आज के समय में अधिकांश लोग इस इतिहास से अनजान हैं। यहां तक कि महाराणा प्रताप का ससुराल बिजौलियां में है – यह भी अधिकांश लोगों को टीवी धारावाहिकों के माध्यम से ही पता चला।अब वक्त है कि इस स्वर्णिम इतिहास को स्कूलों, कॉलेजों, संग्रहालयों, व लोक संस्कृति उत्सवों के माध्यम से नई पीढ़ी तक पहुँचाया जाए। इतिहास सिर्फ अतीत नहीं होता – यह भविष्य की नींव होता है ।

जहाजपुर का स्वस्तिधाम जैन तीर्थः जहाज की आकृति में बना भव्य मंदिर, आस्था का केंद्र

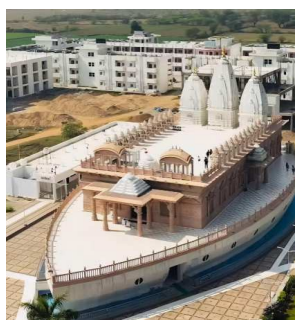

भीलवाड़ा फोकस @ जहाजपुर

जिले के राष्ट्रीय राजमार्ग 39 पर स्थित स्वस्तिधाम अतिशय क्षेत्र अपनी भव्यता, शांति और धार्मिक वातावरण के कारण जैन श्रद्धालुओं के लिए एक विशिष्ट तीर्थ बन गया है। यहाँ श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अलौकिक और भव्य मंदिर स्थापित है, जो अपनी वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

मंदिर की वास्तुशिल्पीय भव्यता-

भीलवाड़ा से लगभग 100 किमी और जयपुर से 180 किमी दूर यह तीर्थ एक विशाल जहाज की आकृति में निर्मित है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर स्थित मानस्तंभ श्रद्धालुओं का स्वागत करता है। मंदिर के अंदर विशाल संगमरमर से बना प्रार्थना हॉल है, जिसमें तीन वेदियाँ (सहस्त्रकूट) हैं और इनमें 1008 प्रतिमाएं विराजमान हैं।

दूसरे तल पर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की चतुर्थकालीन आकर्षक प्रतिमा मुख्य वेदी में विराजमान है, जो स्वर्ण कार्य से अलंकृत है।

दाहिनी ओर श्री 1008 आदिनाथ भगवान और बाईं ओर श्री 1008 महावीर स्वामी की प्रतिमाएं स्थापित हैं। शीर्ष तल पर 24 तीर्थंकरों की 24 वेदियाँ स्थापित हैं, जो तीर्थ के शिखर बिंदु को दर्शाती हैं।

प्रतिमा प्राप्ति की ऐतिहासिक घटना -

सन् 2013 में महावीर जयंती के अवसर पर, मंदिर क्षेत्र के पास एक घर से श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई। इसे श्रद्धापूर्वक मंदिर में प्रतिष्ठित किया गया। इस घटना ने स्थानीय जैन समाज में एक नई आस्था का संचार किया और इसके बाद मंदिर निर्माण का निर्णय लिया गया।

प्रतिष्ठा महोत्सव और धार्मिक आयोजन-

21 जनवरी से 7 फरवरी 2020 तक यहां पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया। यह आयोजन आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज एवं आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

शांति और श्रद्धा का प्रतीक-

स्वस्तिधाम अपने शांत वातावरण, सुंदर स्थापत्य और धार्मिक महत्व के चलते भक्तों का मन मोह लेता है। श्रद्धालु दूर-दूर से यहां दर्शन और ध्यान के लिए आते हैं। यह स्थान सामाजिक समरसता और धार्मिक सद्भाव का प्रतीक बन चुका है।

यहाँ से समीपवर्ती जैन तीर्थ स्थल-

- बिजौलिया – 65 किमी
- चंवलेश्वर – 35 किमी
- पदमपुरा – 160 किमी
- महावीर जी – 250 किमी
- केशवराय पाटन – 90 किमी

जोगणिया माता का हाड़ा राजवंश की कुलदेवी से चमत्कारी शक्ति पीठ तक का सफ़र

भीलवाड़ा फोकस @ बेगूं

दिनेश गुर्जर

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ ज़िले के बेगूं उपखंड में पहाड़ी की चोटी पर स्थित जोगणिया माता मंदिर न केवल एक आस्था का केंद्र है, बल्कि मेवाड़ के इतिहास और शक्ति साधना की विरासत का प्रमाण भी है। करीब 1200 वर्ष पुराना यह मंदिर हर वर्ष हजारों श्रद्धालुओं को अपनी ओर खींचता है।

हाड़ा वंश और कुलदेवी का संबंध -

इतिहासकारों के अनुसार, यह मंदिर 9वीं से 10वीं शताब्दी के बीच निर्मित हुआ था। उस समय बंबावदा गढ़ क्षेत्र (वर्तमान बेगूं) पर हाड़ा वंश का शासन था। हाड़ा राजपूतों ने जोगणिया माता को अपनी कुलदेवी के रूप में पूजा और संरक्षण दिया। राजवंश के सैनिक युद्ध पर निकलने से पहले यहां आशीर्वाद लेने आते थे, और मान्यता थी कि देवी की कृपा से वे विजयी होकर लौटते हैं।

स्वयंभू प्रतिमा और चमत्कारी मान्यताएँ -

स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार, देवी

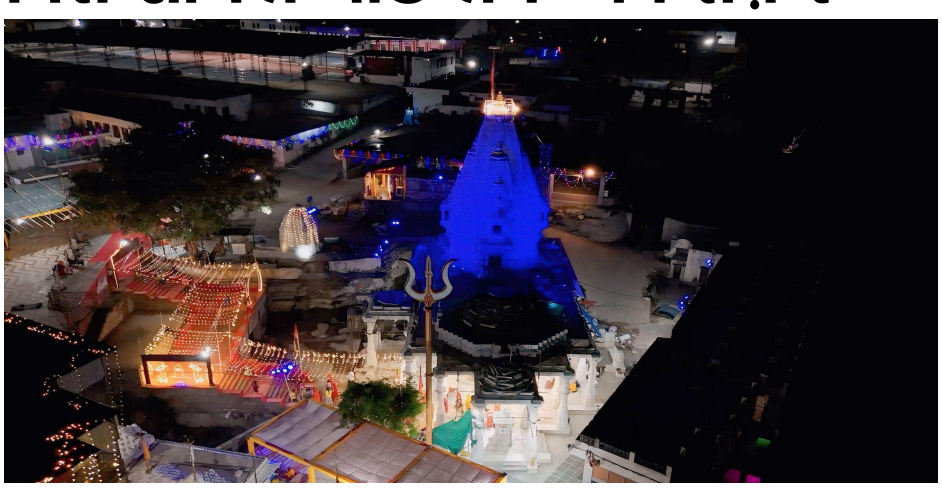

की प्रतिमा स्वयंभू है – अर्थात देवी की मूर्ति बिना किसी मानवी हस्तक्षेप के स्वयं भूमि से प्रकट हुई। यह चमत्कार उस समय हुआ जब गांव के चरवाहों ने पहाड़ी से आती तेज रोशनी और अद्भुत गंध को महसूस किया।

हथकड़ी खुलवाने वाली चमत्कारी शक्ति -

एक अनूठी परंपरा यह भी है कि यदि कोई व्यक्ति गलती से अपराध में फंस जाए, तो वह यहां अपनी हथकड़ी या बेड़ियाँ चढ़ाकर माफी माँगता है। मान्यता है कि माता के दर्शन और प्रार्थना से कई बार बिना ताले की चाबी के भी जंजीरें खुल जाती हैं, और व्यक्ति दोषमुक्त हो जाता है। जानकारी के अनुसार, यह चमत्कार वर्षों से लगातार देखा गया है, और आज भी लोग कोर्ट केस, जेल के भय या अन्य बंधनों से मुक्ति की प्रार्थना लेकर यहाँ पहुँचते हैं।

नवरात्रि में लगता है विशाल मेला-

यह मंदिर नवरात्रों में विशेष रूप से जागृत माना जाता है। दोनों नवरात्रों (चैत्र और आश्विन) में यहाँ विशाल मेला लगता है। सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु पैदल चलकर दर्शन करने आते हैं।

यहाँ श्रद्धालु लाल चुनरी, नारियल और दीपक (ज्योत) अर्पित करते हैं और परिवार की सुख-शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

प्राकृतिक छटा और आध्यात्मिक ऊर्जा -

यह मंदिर बेगूं से लगभग 20 किमी दूर, अरावली की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर के चारों ओर फैली हरियाली, शांति और मंदिर की घंटियाँ आत्मा को गहरे तक सुकून देती हैं।

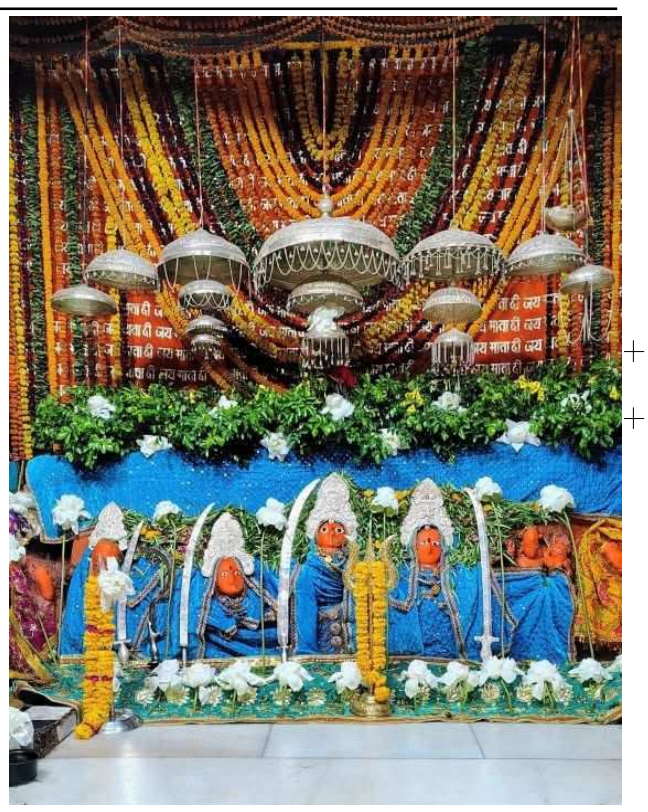

'भीलवाड़ा फोकस'
अपने शहर और गाँव के समाचार, सूचनाएँ, सार्वजनिक घोषणाएँ या विज्ञापन प्रकाशित करवाने के लिए संपर्क करें।
Mo.– 8696795959
Bhilwarafocus@gmail.com
BHILWARA Focus
भीलवाड़ा की बात, फोकस के साथ

भीलवाड़ाः राजस्थान की ऐतिहासिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक राजधानी

भीलवाड़ा फोकस @ भीलवाड़ा

डॉ. चेतन ठठेरा

राजस्थान का एक प्रमुख जिला और ऐतिहासिक गाथाओं से समृद्ध नगर है, जो मेवाड़ क्षेत्र में स्थित है। यह राज्य के सबसे बड़े जिलों में से एक है और अपनी औद्योगिक ताकत, ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक स्थलों और कृषिपरक तालाबों के कारण देश-विदेश के पर्यटकों, शोधकर्ताओं और उद्योगपतियों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

भौगोलिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भीलवाड़ा, 1948 में राजस्थान राज्य का हिस्सा बना, इससे पहले यह उदयपुर रियासत के अधीन था। वर्ष 1949 में मेवाड़ और शाहपुरा को मिलाकर इसे स्वतंत्र जिला बनाया गया।

भीलवाड़ा का नाम भील राजा भलराज के नाम पर पड़ा, जो एक शक्तिशाली और साहसी योद्धा थे। भील जनजाति की सांस्कृतिक छाप आज भी यहां देखने को मिलती है।

औद्योगिक पहचान- वस्त्र नगरी भीलवाड़ा

भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर', 'वस्त्र नगरी' और 'टेक्सटाइल सिटी ऑफ इंडिया' कहा जाता है। यहाँ लगभग 1500 से अधिक टेक्सटाइल उद्योग कार्यरत हैं, जो भारत के कुल सूती कपड़ा निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

देवनारायण मंदिर

26 फरवरी 2009 को भारत सरकार ने इसे आधिकारिक रूप से कपड़ा निर्यातक शहर का दर्जा दिया।

2025 तक, भीलवाड़ा टेक्सटाइल पार्क, इंडस्ट्रियल क्लस्टर, और ग्लोबल ट्रेड नेटवर्क के चलते यह क्षेत्र भारतीय निर्यात मानचित्र पर मजबूती से स्थापित है।

खनिज और अभ्रक नगरी -

भीलवाड़ा जिला खनिज संपदा में भी समृद्ध है। विशेष रूप से यहां की खदानों में अभ्रक (माइका) की प्रचुरता के कारण इसे अभ्रक नगरी भी कहा जाता है। इसके अलावा लौह अयस्क, फेल्सपार, क्वार्ट्ज, डोलोमाइट आदि खनिजों की भी बड़े पैमाने पर खुदाई होती है।

कृषि और जल संसाधन -

राजस्थान जैसे अर्ध-शुष्क राज्य में भी भीलवाड़ा सिंचाई की दृष्टि से अव्वल है।

यहाँ की प्रमुख नदियाँ - बनास, बेड़च, मेनाल और खारी - सिंचाई और जल संरक्षण में अहम भूमिका निभाती हैं।

तालाबों की विशेष परंपरा के कारण यहां राजस्थान में सर्वाधिक तालाबों से सिंचाई की जाती है।

भाषा और संस्कृति -

यहां की जनसंख्या हिंदी के साथ-साथ एक मिश्रित स्थानीय बोली खैराड़ी बोलती है, जो मारवाड़ी, ढूंढाड़ी और हाड़ौती का समावेश है।

नेशनल हाइवे 27 स्थित मेनाल मंदिर

भीलवाड़ा राजस्थानी लोक परंपरा, नृत्य, संगीत और शिल्पकला के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ हर वर्ष मेले, त्योहार और धार्मिक आयोजन सामाजिक सौहार्द का उदाहरण बनते हैं।

ऐतिहासिक आंदोलन- बिजोलिया किसान आंदोलन

भारत का पहला अहिंसात्मक किसान आंदोलन - बिजोलिया किसान आंदोलन - भीलवाड़ा जिले में 1897 से 1941 तक चला, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नया दृष्टिकोण दिया।

यह आंदोलन अंग्रेजों और रियासती अत्याचार के खिलाफ किसानों की संगठित आवाज़ थी।

प्रमुख दर्शनीय स्थल

भीलवाड़ा जिले में अनेक धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थल हैं-

- सवाई भोज (देवनारायण) मंदिर, सींद - 1100 वर्ष पुराना, यह तीर्थ स्थल गुर्जर समाज का एकमात्र तीर्थ स्थल है।
- बाईसा महारानी का मंदिर, हरणी महादेव, धनोप माता, तिलस्वा महादेव, नीलकंठेश्वर महादेव (मेनाल)
- रामद्वारा, शाहपुरा - रामस्नेही संप्रदाय का प्रधान पीठ
- मांडलगढ़ किला व महाराणा सांगा की समाधि
- मांडल का जगन्नाथ कछुआ मंदिर - 32 खंभों की छतरी सहित
- बागोर का महासतियों का टीला - पाषाण युगीन सभ्यता का प्रमाण

2025 में पर्यटन विभाग द्वारा इन स्थलों को हेरिटेज सर्किट में शामिल किया गया है और यहां तक पहुंचने के लिए सड़क और रेल कनेक्टिविटी को सुदृढ़ किया गया है।

विकास की दिशा में भीलवाड़ा

- 2025 में शुरू हुआ भीलवाड़ा स्मार्ट सिटी मिशन - जिसमें यातायात, जल आपूर्ति, सफाई और डिजिटलीकरण पर विशेष कार्य किया जा रहा है।
- भीलवाड़ा मेडिकल कॉलेज और नया आयुर्विज्ञान संस्थान जैसे उच्च शिक्षा संस्थान जिले को शिक्षा के क्षेत्र में मजबूत बना रहे हैं।
- रेलवे और सड़क नेटवर्क से जयपुर, उदयपुर, कोटा और अहमदाबाद से सीधी पहुंच संभव है।

विशेष उपलब्धि

भीलवाड़ा जनसंख्या के अनुपात में पूरे एशिया में फोर व्हीलर वाहन की उपलब्धता और क्रय में एशिया में नंबर वन है। किसी समय में बोरिंग के व्यवसाय में भी भीलवाड़ा देश में अग्रणी था यहां के उद्यमी देश ही नहीं दुनिया में भी अपना परचम फहरा रहे हैं

बिजौलिया में गुहिल काल के तीन शिवालय

मंदिरों के द्वारों पर विराजित हैं नव लक्ष्मी की दुर्लभ प्रतिमाएं

भीलवाड़ा फोकस @ बिजौलिया

श्याम विजय

भीलवाड़ा जिले के ऐतिहासिक कस्बे बिजौलिया में स्थित मंदाकिनी समूह के तीन शिवालय – हजारेश्वर, उंडेश्वर और महाकालेश्वर – गुहिल वंशकाल की समृद्ध स्थापत्य कला और धार्मिक आस्था का अद्वितीय उदाहरण हैं। इन मंदिरों का निर्माण 12वीं शताब्दी में हुआ था, और इनकी विशेषता है - मंदिरों के द्वारों पर स्थापित महालक्ष्मी की नौ प्रतिमाएं, जो देशभर में कहीं और इस रूप में नहीं मिलतीं।

इन मंदिरों में नव लक्ष्मी की स्थापना अष्ट सिद्धि और नव निधियों की पौराणिक मान्यता से जुड़ी है। शास्त्रों के अनुसार ये नव निधियां - पद्म, महापद्म, नील, अंकुर, नंद, मकर, कच्छप, शंख और मिश्र - देवी लक्ष्मी की विशेष आध्यात्मिक शक्तियों को दर्शाती हैं। यही कारण है कि यहां नव लक्ष्मी की स्थापना को दुर्लभ और अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

खंडित शिलालेख इस ऐतिहासिक धरोहर की पुष्टि करते हैं। जानकारों के अनुसार, बिजौलिया क्षेत्र में गुहिल काल में मेनाल की तर्ज पर कई धार्मिक और स्थापत्य महत्व के निर्माण हुए थे, जो आज भी अपनी बेजोड़ शिल्पकला के लिए विख्यात हैं।

मंदाकिनी मंदिर में विराजित हैं नौ लक्ष्मी प्रतिमाएं

मंदाकिनी मंदिर परिसर में महालक्ष्मी की नौ प्रतिमाएं विद्यमान हैं, जिनकी पूजा आज भी विधिपूर्वक की जाती है। हालांकि मंदिर में अन्य देवी प्रतिमाएं भी स्थापित हैं, लेकिन समय के साथ कुछ प्रतिमाएं खंडित हो जाने से उनकी पहचान कर पाना कठिन हो गया है।

बिजौलिया का 800 वर्ष पुराना लक्ष्मी मंदिर भी दर्शनीय

कस्बे में स्थित एक अन्य लक्ष्मी मंदिर लगभग 800 वर्ष पुराना है। इस मंदिर की परिक्रमा पथ पर भी दो लक्ष्मी प्रतिमाएं स्थापित हैं, जो श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र बनी हुई हैं।

बिना किसी दिखावे के मानवता की मिसालः बिजौलिया में पिता-पुत्र ने अब तक 50 से अधिक लावारिस शवों का किया अंतिम संस्कार

भीलवाड़ा फोकस @ भीलवाड़ा

मानव तिवाड़ी

जहाँ लोग अपनों को भी कंधा देने से कतराते हैं, वहाँ यह पिता-पुत्र दोनों वर्षों से अनजानों को भी सम्मान के साथ अंतिम विदाई दे रहे हैं। क़स्बे के जैन समाज से जुड़े नवीन नाहर और उनके पुत्र योगेश नाहर ने एक ऐसा कार्य अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है, जिसे सुनकर हर संवेदनशील व्यक्ति का मन श्रद्धा से झुक जाए। यह दोनों अब तक 50 से अधिक लावारिस शवों का हिन्दू रीति-रिवाज से अंतिम संस्कार कर चुके हैं - वो भी अपने खर्च पर, बिना किसी प्रचार और सरकारी मदद के। नवीन नाहर इस नेक कार्य में 1998 से जुटे हैं, जब उन्होंने पहली बार एक पांच दिन पुरानी क्षत-विक्षत लाश को देखा, जिसे न पुलिस छूने को तैयार थी, न एंबुलेंस वाला पास आ रहा था। वह दृश्य उनके दिल को झकझोर गया और उन्होंने उसी दिन ठान लिया कि अब से कोई लावारिस शव बिना सम्मान के विदा नहीं होगा। उनके पुत्र योगेश नाहर भी पिछले 12 वर्षों से इस सेवा में पिता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लगे हैं। योगेश बताते हैं कि इस काम को करने से जो मानसिक शांति मिलती है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

पुलिस भी देती है सूचना, समाज करता है सराहना

बिजौलिया उपखंड क्षेत्र में जब भी किसी लावारिस शव की सूचना मिलती है, तो पुलिसकर्मी सबसे पहले नवीन और योगेश को सूचित करते हैं। दोनों तुरंत मौके पर पहुँचते हैं और शव को सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार के लिए श्मशान ले जाते हैं। एक शव के अंतिम संस्कार में लगभग 4000 से 5000 का खर्च आता है, जो ये दोनों पूरी तरह से अपनी जेब से वहन करते हैं। न वे किसी से सहायता मांगते हैं, न ही प्रचार चाहते हैं।

प्रशासन और समाज का सलाम

इस कार्य के लिए स्थानीय समाज के लोग, प्रशासनिक अधिकारी, और पुलिस महकमा भी इन दोनों की खुले दिल से सराहना करते हैं। नवीन और योगेश का यह कार्य न केवल लावारिसों को सम्मान देता है, बल्कि समाज को भी यह सिखाता है कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है।

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक कपिल विजयवर्गीय के लिए मुद्रक वेदान्त प्रभाकर मेधा कप्यूटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिन्टर्स नंदभवन, बड़े पार्क के पास, कांवाखेड़ा भीलवाड़ा (राज.)से मुद्रित व मकान न. - 1 ए - धानमंडी योजना, कोर्ट के सामने बिजौलिया , भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक - श्याम सुन्दर विजयवर्गीय । मो. 8696795959, RNI No. : RJHIN/25/A0890